Concept of Static in economics
Micro and Macro static
Merit of Static
Demerit of Static
Dynamic economic Analysis
Importance
Limitations

Dr.Vivek Mishra
SRAP College
Bara Chakia

- किसी भी अर्थव्यवस्था से संबंधित किसी समस्या के विश्लेषण के लिए हम उससे सम्बद्ध चरों के बीच फलनात्मक संबंध का अध्ययन करते हैं।
- इस प्रकार के अध्ययन के दो रास्ते हैं- स्थैतिक तथा प्रवैगिक।
- आर्थिक विश्लेषण में इन दोनों ही विधियों का महत्वपूर्ण स्थान है।
- 1925 के पूर्व अधिकांश आर्थिक सिद्धांतों का प्रतिपादन स्थैतिक विश्लेषण के ही माध्यम से ही हुआ है।
- 1925 के पूर्व प्रवैगिक आर्थिक विश्लेषण का प्रयोग केवल व्यापारचक्रीय उच्चावचनों के विश्लेषण के लिए ही किया गया।@

Economic Static

- An economic variable is said to be stationary, if the value of the variable does not change over time, that is, its value is constant over time.

- Example: if the price of a good does not change as time passes, price will be called stationary.
- Likewise, national income is said to be stationary if its magnitude does not change through time.

- Thus, the whole economy can be said to be stationary, if value of all important variables are constant through time.@

Micro and macro static

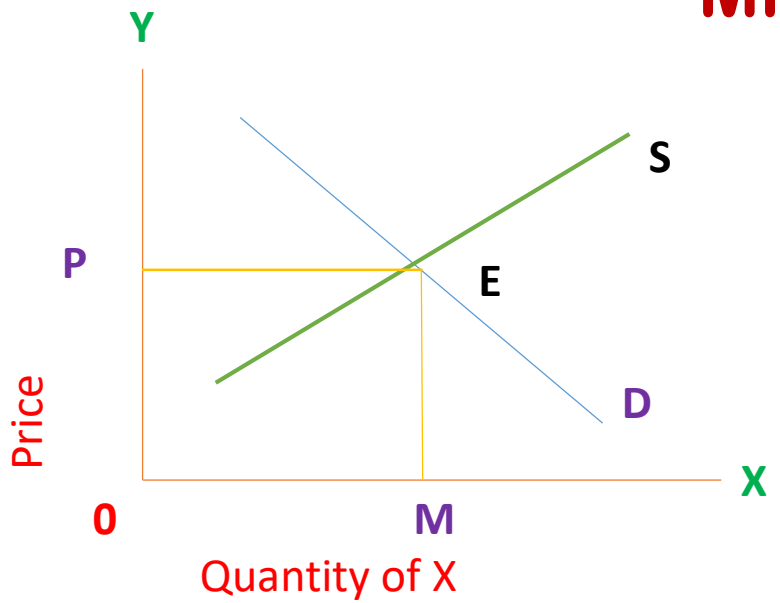

Micro static equilibrium

Macro static equilibrium

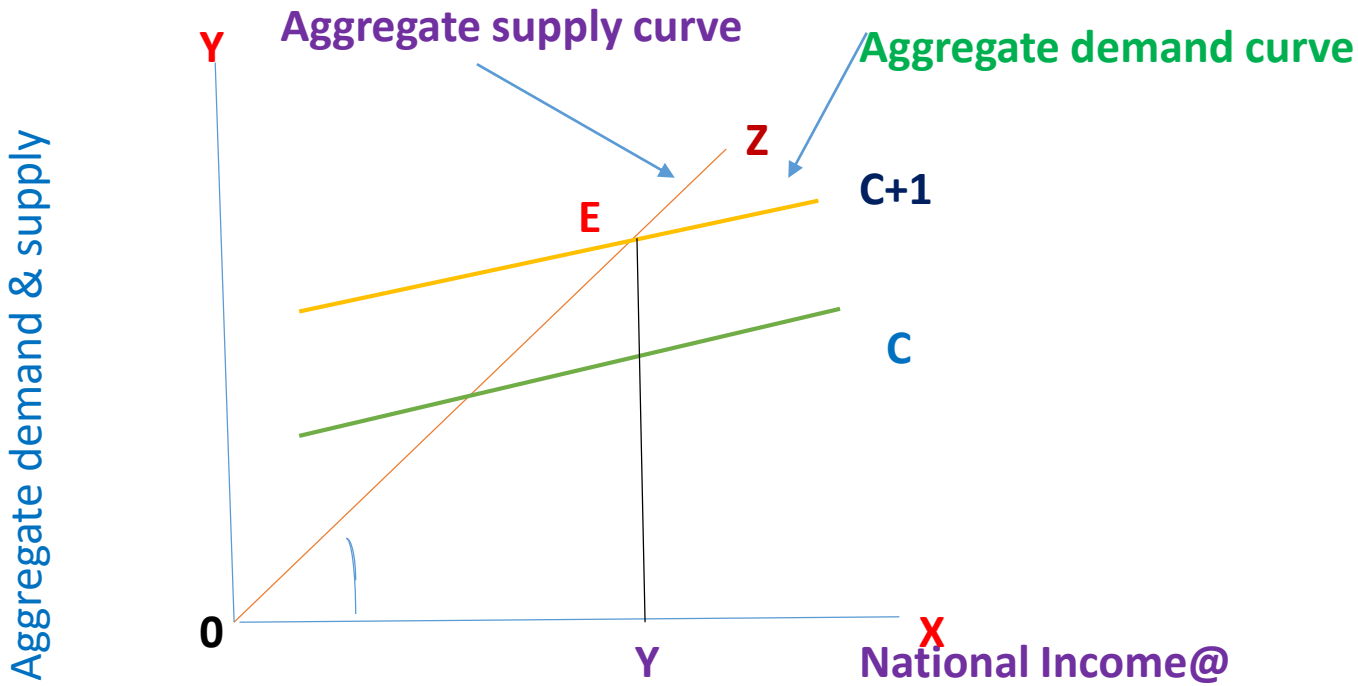

- स्थैतिक विश्लेषण एक ऐसी विधि है जो आर्थिक निकाय के विभिन्न तत्त्वों - मूल्य तथा वस्तुओं की मात्रा जो एक ही समय से संबंधित है - के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करती है। प्रो. शुम्पीटर

- स्थैतिक विश्लेषण कुछ निश्चित चारों के बीच एक निश्चित समयावधि में अन्य निर्धारक चरों को स्थिर मानते हुए फलनात्मक संबंध का अध्ययन है।

- Statics techniques are used because it makes the otherwise complex phenomenon simple and easier to handle.

- Static concerns itself with the simultaneous and instantaneous or timeless determination of economic variables by mutually interdependent relations.@

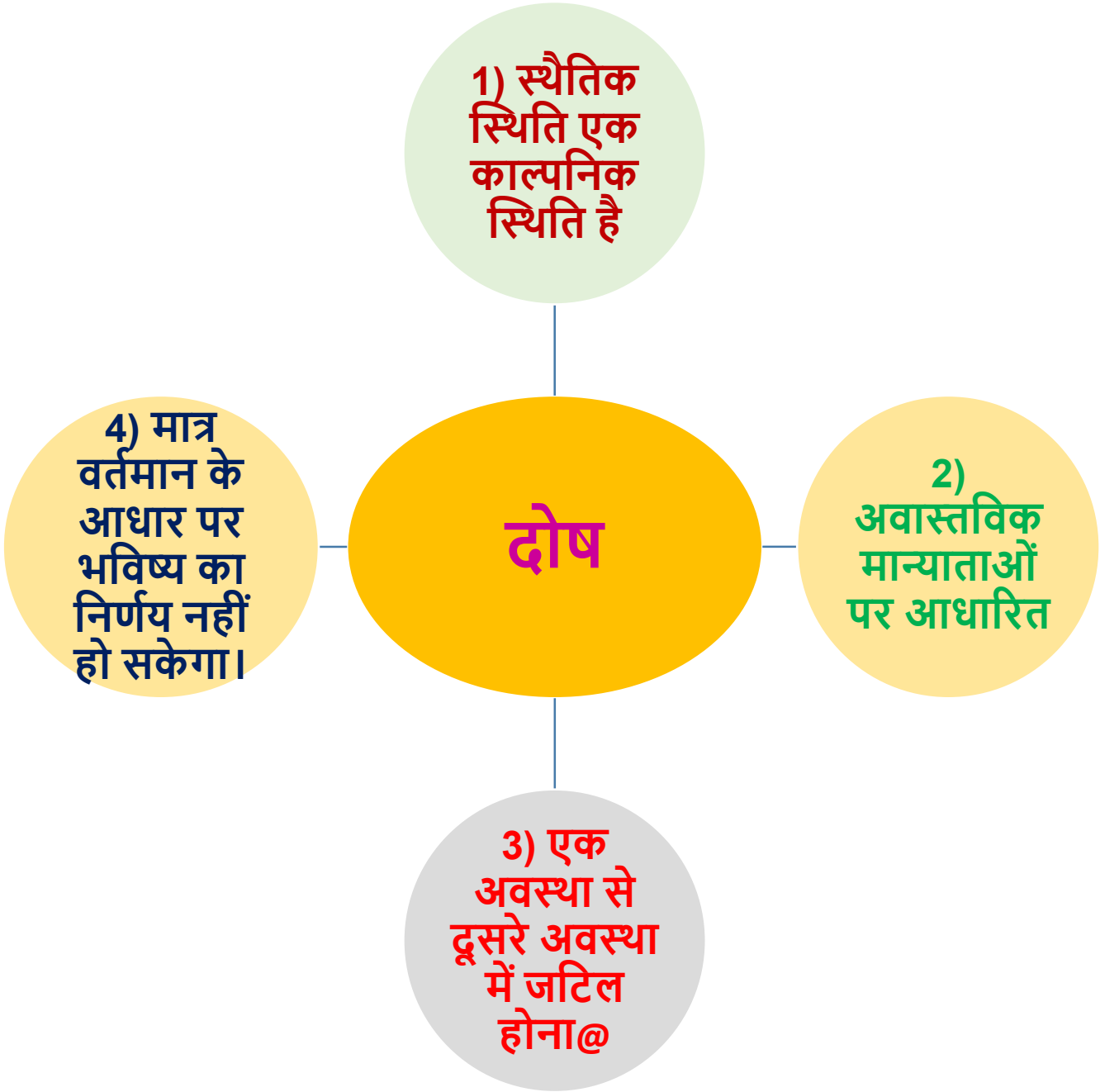
1) स्थैतिक स्थिति एक काल्पनिक स्थिति है
4) मात्र वर्तमान के आधार पर भविष्य का निर्णय नहीं हो सकेगा।
दोष
2) अवास्तविक मान्याताओं पर आधारित
3) एक अवस्था से दूसरे अवस्था में जटिल होना@

Cont.

Dynamic economic Analysis

- **रेग्नर फ्रिश** के अनुसार कोई भी प्रणाली प्रवैगिक कही जाएगी यदि समयांतर में उसके व्यवहार का निर्धारण जिनमे विभिन्न समय विन्दुओं से सम्बंधित चर आवश्यक रूप से सम्मलित हो, यदि सम्बंधित चर विभिन्न समय विन्दुओं से सम्बंधित हो तो विश्लेषण प्रवैगिक होगा |

- **हिक्स** के अनुसार प्रवैगिक उन भागों को कहते हैं जिनमे प्रत्येक इकाई के सम्बन्ध में तिथि निर्धारण आवश्यक है |

$$D_t = f(P_{t+1})$$ ------dynamic analysis

महत्त्व

- **प्रोफ. रॉबिन्स के अनुसार**

- यह अनेक आर्थिक सिद्धान्तों की क्रियाशीलता की जांच करता है

- यह नए तत्तवों पर प्रकाश डालता है , इससे भविष्यवाणी(forecasting) की जा सकती है|

- व्यावहारिक जीवन में स्थैतिक विश्लेषण की दशाएं नहीं मिलती हैं |

- अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है |

इस कारन इसका महत्व बढता जा रहा है |

सीमाएं

- आर्थिक विश्लेषण की यह एक जटिल रीति है |
- इसमें कठिन तत्तवों का समावेश करना पड़ता है |
- परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहे हैं जिसे मापना कठिन होता है |
- इसलिए प्रोफ. मेहता ने कहा है कि ऐसी समस्या का अध्ययन स्थैतिक आधार पर छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में करना चाहिए |

XXXXX